उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर (IASE)

Name – Dr. Nishi Bhambari
Class – B.Ed - 2nd Year
Subject - Learning and Teaching
Unit – I
Topic – Learning as a concept

Objectives :-

- बी.एड. प्रशिक्षार्थी अधिगम की अवधारणा को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से समझ सकेंगे।

Content :- Learning as a concept

व्यक्ति अपने परिवेश से सूचनाओं के रूप में जो भी ज्ञान प्राप्त करता है, व्यक्ति का मस्तिष्क उसी रूप में तथा उसी शैली में ही उस ज्ञान को पूर्णतः स्वीकार नहीं कर लेता है।

जो नवीन ज्ञान व्यक्ति को प्राप्त होता है वह मस्तिष्क में पहले से ही मौजूद सूचना एवं ज्ञान से मिलाकर उस ज्ञान का विश्लेषण किया जाता है। आवश्यकतानुसार उस ज्ञान का एवं पूर्व अनुभव का संशोधन होता है, फिर एक नई आवधारणा बनती है अंत में उस अवधारणा का परिस्थिति के अनुसार उपयोग किया जाता है अथवा पुनः संग्रह किया जाता है अर्थात इस पूरी प्रक्रिया में बाह्य उद्दीपन से ज्ञान प्राप्त होता है, मस्तिष्क में विश्लेषण की प्रक्रिया होती है तत्पश्चात output (प्रतिफल) परिणाम के रूप में जाना जाता है अर्थात व्यक्ति सीख लेता है।

Input → Process → Output

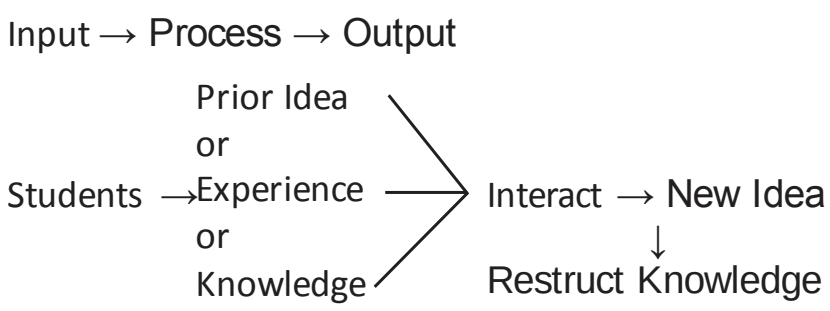

उदाहरण – 1

सर्वप्रथम बच्चा चार पैर वाले घोड़े को देखता है, तो उसे इसका स्पष्ट ज्ञान नहीं होता है। उसे बतया जाता है कि ये घोड़ा है, बच्चा पहला अनुभव प्राप्त करता है कि चार पैर वाला जानवर घोड़ा है।

- अब वह प्रारंभ में चार पैर वाले जानवर को घोड़ा कहता है।
- धीरे–धीरे जैसे उसको अपने परिवेश से अनुभव प्राप्त होता है, नवीन ज्ञान एवं सूचनाएं प्राप्त होती है तो वो घोड़े/गाय में उनके कार्यों, शारीरिक संरचना आदि के आधार पर वर्गीकृत कर पाता है।
- अब बच्चे को घोड़े के बारे में सामान्य ज्ञान प्राप्त हो जाता है उसकी सही अवधारणाा बनती है, वो वर्गीकृत कर पाता है।

स्पष्टीकरण –

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है, कि बच्चे का मस्तिष्क वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण (perception) करता है, उनका विश्लेषण करता है, वस्तुओं की तुलना (वर्गीकरण) करता है, वर्गीकरण के आधार पर समान गुणों को मिलान करता है एवं असमान गुणों के आधार पर वस्तुओं को वर्गीकृत करता है अंत में उस वस्तु के बारे में अनुभव प्राप्त कर सीखता है और उस वस्तु की अवधारणा निर्मित करता है।

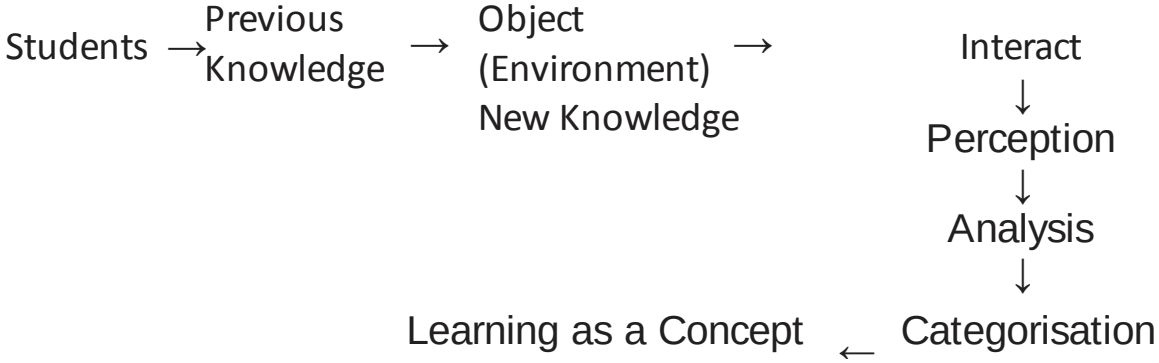

उदाहरण – 2

बगीचे में कई वृक्ष है, जिसे बच्चा देखता है, उसे अनुभव होने लगता है कि वृक्ष हरे होते हैं, कुछ बड़े, कुछ छोटे होते हैं। धीरे–धीरे वृक्षों का कल्पना चित्र उसके मस्तिष्क में बन

जाता है और वह पूर्ण अनुभव तथा प्रतयक्षीकरण के द्वारा वृक्षों की पहचान करता है, समानताओं/असमनताओं के आधार पर वृक्षों को वर्गीकृत कर लेता है अर्थात वृक्ष की अवधारणा का निर्माण हो जाता है वह सीख लेता है।

उदाहरण –3

एक टेबल में एक आम रखा है,

- जिसे बच्चा देख रहा है।
- आम यहां एक उद्दीपक (Stimulus) का कार्य कर रहा है।
- पूर्व में उसे सब फल आम ही लगतते हैं।
- आम की गंध, रंग–रूप, आकृति का ज्ञान उसे इंद्रियों के माध्यम से होने लगता है, sensory Organs से ज्ञान प्राप्त होता है, जो एक सरल प्रक्रिया है।

अगली अवस्था –

अब बालक के मस्तिष्क में उसके जानने, समझने की मानसिक प्रक्रिया प्रारंभ होती है जो अर्थयुक्त होगी अर्थात रंग कैसा है, स्वाद कैसा है–खट्टा/मीठा है, आम का आकार कैसा है–बड़ा/छोटा/गोल। आदि आम के गुणों एवं विशेषताओं का ज्ञान संबंधित जानकारी जो प्रत्यक्षीकरण के फलस्वरूप बच्चे को प्राप्त होती है अर्थात किसी अर्थहीन संवेदनात्मक अनुभूतियों (Sensory impression) को अर्थयुक्त ढांचे में बदलना। इसी प्रकार प्रत्यक्षीकरण के माध्यम से आम के बारे में प्रत्यय निर्माण हो जाता है अर्थात बच्चा सीख लेता है। आम कैसा होता है, बच्चा मस्तिष्क से अनुभव प्राप्त करते–करते अर्थात पूर्व अनुभव के द्वारा मस्तिष्क वस्तुओं की प्रतिमाएं बना लेता है और प्रत्यक्ष ज्ञान के द्वारा उन वस्तुओं की अवधारणा बना लेता है।

आंकलन – Learning as a concept का आशय स्पष्ट करें एवं उदाहरण प्रस्तुत करें।